antim yatra:arunjaity.qxd 9/26/2010 7:38 PM Page 46

अंतिम यात्रा

चित्रकूटः नानाजी को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष वीरेंद्रजीत सिंह

कि नानाजी चुनौतियों से निपटने के विशेषज्ञ थे। उनके संपर्क में जो आया, वह उनके संपर्क में अनवरत रहा। यह उनका चुंबकीय व्यक्तित्व था। राजनीति से स्वेच्छा से अलग होकर वह रोल मॉडल बन गए। कहा जा सकता है कि नानाजी ने जबसे सामाजिक जीवन में कदम रखा तबसे वह रोल माडल ही बनते गए, जिसके सामने पद-प्रतिष्ठा सब कुछ बौनी थी। इसलिए उनके सम्मान का धनत्व लगातार बढ़ता गया।

उनके विश्राम का साक्षात गवाह बना चित्रकूट और उसका समूचा परिवेश। दिल्ली जाने की उनकी तनिक भी इच्छा नहीं थी और इलाज के लिए यह इच्छा तो कतई नहीं थी। वह इस सनातन तथ्य को भलीभांति जानते थे जिसके मुताबिक आयु किसी इलाज के वश में नहीं होती। लिहाजा शनिवार 27 फरवरी 2010 को शाम पौने पांच बजे चित्रकूट के जानकी कुंड में उन्होंने काल के साथ संघर्ष बंद कर दिया। शरीर छोड़ने के पाँच मिनट पूर्व तक लंबे समय से संस्थान से जुड़े कार्यकर्ता परिवार से मिलकर उनका हाल-चाल लेते रहे। उन्हें अपने अंतिम समय तक स्नेह, प्रेम, आत्मीयता के साथ अनवरत कार्य करने की प्रेरणा देते रहे। इसके बाद दिल्ली जाने के लिए वह न केवल तैयार थे, बल्कि अपनी इस यात्रा की व्यवस्था की घोषणा भी एक दशक पहले ही कर चुके थे। उनको इसका भान काफी पहले हो गया था। यह यात्रा देश की राजधानी दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान तक होनी थी जहां उनको अपनी देह देनी थी।

नानाजी ने दशकों पहले राजनीति से सन्यास ले सामाजिक कार्य में उतर कर रायसीना की पहाड़ियों से चलने वाली दिल्ली की राजनीति को एक संदेश दिया था। अब दिल्ली में देहदान कर उन्होंने उस केंद्रीय राजनीति को दोबारा सीख देकर यह याद दिलाया कि सामाजिक कार्य की चाहत रखने वालों के लिए चारों तरफ खुला मैदान है जिसमें सुकून है, शांति है और उसके साथ जीवंतता भी। नर जहां नारायण है। साठ साल की उम्र के बाद राजनीति से परे जाकर सामाजिक कार्य संभव है, बस एक अदद जिजिविषा चाहिए और तब मार्ग अपने-आप बनता जाएगा। उनके निधन पर लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि उनके जीवन से राजनेताओं को प्रेरणा लेना चाहिए कि राजनीति में होने के बावजूद नानाजी ने इसके आकर्षण व फिसलन से दूरी बनाए रखी।

कहा जा सकता है कि नानाजी अंगद की तरह पांव जमाने के हिमायती थे, जहां गए जम गए। इसका नमूना उन्होंने राजनीति में पेश किया और राजनीति छोड़ने के बाद सामाजिक जीवन में भी। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के लिए भी नानाजी किसी पहेली से कम नहीं थे। कहा जा सकता है कि नानाजी की देह ने संस्थान का माहौल बदल दिया था। उनका देहदान अस्पताल के डाक्टरों और स्टाफ के लिए भी एक यादगार क्षण था। बाकी के लिए एक मिसाल बना। कुछ मरीजों से कहते हुए सुना 'चित्रकूट वाले नानाजी।' पार्थिव देह पहुंचने के पहले यह खबर सबको थी, लिहाजा इस क्षण के गवाह भी सभी बनना चाहते थे। झंडेवालान से जिस रास्ते से उनकी देह को संस्थान ले जाया गया, पूरा मार्ग भी उनके त्याग और तपस्या का गवाह बना और उस समय मार्ग से गुजरने वाले यात्री भी।

बहरहाल, नानाजी की यह अविस्मरणीय यात्रा पूरे देश के लिए शोक का एक बहुत बड़ा कारण थी और हजारों शोकाकुल लोगों के लिए चित्रकूट के प्रयाण का आधार बन गई। जानकी कुंड अस्पताल की चौखट से बाहर निधन का

नानाजी को मध्य प्रदेश शासन द्वारा राजकीय सलामी

चित्रकूट में नानाजी की शव यात्रा में उमड़ा जन सैलाब